**Date: 09 Dec 2025** **Source:- जनसत्ता**

# भारत, अमेरिका 10-11 दिसंबर को व्यापार समझौते पर वार्ता करेंगे

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 8 दिसंबर।

अमेरिका के उप अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि (यूएसटीआर) रिक स्विट्जर की अगुवाई वाला एक प्रतिनिधिमंडल प्रस्तावित द्विपक्षीय व्यापार समझौते पर बातचीत के लिए इस सप्ताह भारत का दौरा करेगा। आधिकारिक सूत्रों ने सोमवार को यह जानकारी दी।

सूत्रों ने कहा कि अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल वाणिज्य सचिव राजेश अग्रवाल के साथ विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करेगा। इस समझौते के लिए अमेरिका के मुख्य वार्ताकार (दक्षिण और मध्य एशिया के लिए सहायक अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि) ब्रेंडन लिंच भारत के मुख्य वार्ताकार

> इस समझौते के लिए अमेरिका के मुख्य वार्ताकार (दक्षिण और मध्य एशिया के लिए सहायक अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि) ब्रेंडन लिंच भारत के मुख्य वार्ताकार और वाणिज्य विभाग में संयुक्त सचिव दर्पण जैन के साथ चर्चा करेंगे।

और वाणिज्य विभाग में संयुक्त सचिव दर्पण जैन के साथ चर्चा करेंगे।

सूत्रों ने कहा, 'अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि के कार्यालय से उप व्यापार प्रतिनिधि दूत रिक स्विट्जर के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल 9-11 दिसंबर, 2025 तक भारत का दौरा करेगा। यह बातचीत बाकी पेज 8 पर

# कपास किसानों की बढ़ती चुनौतियां

**फरवरी, 2021 में किसान आंदोलन के बाद देश के किसानों के हित को ध्यान में रख कर कपास पर आयात शुल्क लगाया गया था। मगर इस वर्ष अगस्त में इसे खत्म कर दिया गया। इससे किसानों को अब अपनी फसलों की चिंता सताने लगी है।**

आरके विश्वकर्मा

भारत में कच्चे कपास के आयात पर पहले पांच फीसद मूल सीमा शुल्क, पांच फीसद कृषि अवसंरचना और विकास उपकर तथा इन दोनों पर दस फीसद सामाजिक कल्याण अधिभार, यानी कुल मिलाकर ग्यारह फीसद का सीमा शुल्क लगता था। फरवरी, 2021 में किसान आंदोलन के बाद देश के कपास किसानों के हित को ध्यान में रख कर यह शुल्क लगाया गया था। मगर अब सरकार ने कपड़ा उद्योग की मांग पर कच्चे कपास के आयात पर सभी सीमा शुल्क में 19 अगस्त, 2025 से छूट दे दी है। इस फैसले की सराहना देश के कपड़ा उद्योग ने तो की ही, अमेरिकी कृषि विभाग ने भी बाकायदा बयान जारी करके इसे महत्त्वपूर्ण कदम बताया और कहा कि इससे अमेरिकी कपास का भारत में निर्यात बढ़ेगा। इस निर्णय से भले ही अमेरिका को फायदा हो, लेकिन देश के किसान इससे आहत हैं।

'ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव' (जीटीआरआइ) के मुताबिक, आयात शुल्क में इस छूट का सबसे बड़ा लाभ निश्चित तौर पर अमेरिका को ही होने वाला है। भारत को कपास निर्यात करने वाला अमेरिका सबसे बड़ा देश है, और वहा कपास की नई फसल बाजार में जुलाई-अगस्त से आनी शुरू हो जाती है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आयात शुल्क उस वक्त खत्म किया गया, जब भारतीय किसानों के कपास की नई उपज बाजार में आने ही वाली थी। देश में कपास की फसल अक्तूबर से सितंबर तक होती है। इसी दौरान किसानों को कपास के अच्छे दाम मिलने की उम्मीद होती है। अब विदेश से बड़े पैमाने पर कपास आने से घरेलू कपास की कीमतें गिर जाएंगी।

सीमा शुल्क में छूट की अधिसूचना जारी होने के दिन भारतीय कपास निगम यानी 'काटन कार्पोरेशन आफ इंडिया' (सीसीआइ) ने कपास की कीमत 600 रुपए प्रति कैंडी (एक कैंडी- 356 किग्रा) कम कर दी और उसके दूसरे दिन फिर 500 रुपए प्रति कैंडी कम कर दी। इस तरह महज दस दिनों के भीतर ही कपास के न्यूनतम मूल्य में कुल 1700 रुपए प्रति कैंडी की कमी खुद सरकार की ओर से की गई। अमेरिका की बात की जाए, तो कपास उत्पादन में वह दुनिया में तीसरे स्थान पर है, लेकिन इसकी घरेलू खपत वहां बहुत कम है। कुल उत्पादन का लगभग 85 फीसद कपास वह निर्यात करता है। पहले अमेरिकी कपास का सबसे बड़ा आयातक चीन था, लेकिन डोनाल्ड ट्रंप की शुल्क नीति के कारण चीन वहां से कपास का आयात कम करता जा रहा है। इसलिए अमेरिका को एक वैकल्पिक बाजार की तलाश थी, जो उसे भारत में नजर आ रहा है। हालांकि, भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा कपास उत्पादक देश है और यहां घरेलू खपत कुल उत्पादन का औसतन 95 फीसद है। मगर यहां उच्च गुणवत्ता वाले या ज्यादा लंबे रेशे वाले कपास (ईएलएस) की पैदावार कम होती है और उसकी जरूरत को आयात के जरिए पूरा किया जाता है।

अमेरिकी कृषि व्यापार निकाय काटन काउंसिल इंटरनेशनल (सीसीआइ) तो इस शुल्क को हटाने की मांग लंबे समय से कर रहा था। दरअसल, उच्च गणवत्ता वाले या अति लंबे रेशे के कपास के आयात पर से ग्यारह फीसद शुल्क सरकार ने 20 फरवरी, 2024 से समाप्त कर दिया है, लेकिन इससे छोटे रेशे के कपास आयात पर शुल्क जारी था, जिसे इस वर्ष अगस्त में खत्म किया गया। इस कदम से सरकार अमेरिकी शुल्क की मार से भारतीय वस्त्र निर्यातकों के मुनाफे को तो कुछ हद तक सुरक्षित कर लेगी, लेकिन इसका खमियाजा देश के किसानों को भुगतना पड़ेगा। खासकर तब जब किसानों की आय दोगनी करने का जोर-शोर से दावा किया जा रहा है।

> देश में लगभग साठ लाख किसान परिवार कपास की खेती से अपनी आजीविका चलाते हैं। इसके अतिरिक्त 4-5 करोड़ दूसरे लोग भी इसके व्यापार से जुड़े हैं। यहां पिछले वर्ष कुल 114.47 लाख हेक्टेयर कृषि योग्य जमीन पर कपास की खेती की गई, जो पूरी दुनिया में कपास की खेती के रकबे 314.79 लाख हेक्टेयर का 36.36 फीसद है। रकबे के लिहाज से भारत पूरी दुनिया में पहले स्थान पर है और उत्पादन के मामले में चीन के बाद दूसरे स्थान पर है। मगर यहां प्रति हेक्टेयर कपास की पैदावार (437 किग्रा प्रति हेक्टेयर) विश्व की औसत पैदावार (833 किग्रा प्रति हेक्टेयर) से काफी कम है।

कपास से सीमा शुल्क हटाने को लेकर जारी बयान में कपड़ा निर्माताओं और उपभोक्ताओं के हितों की बात तो कही गई थी, लेकिन कपास किसानों का जिक्र करना सरकार भूल गई। दूसरी बार जारी बयान में कहा गया कि भारतीय कपास निगम लिमिटेड द्वारा संचालित न्यूनतम समर्थन मूल्य व्यवस्था के माध्यम से किसानों के हितों की रक्षा की जाती है, जो यह सुनिश्चित करती है कि किसानों को उनकी उत्पादन लागत से कम से कम पचास फीसद अधिक मूल्य प्राप्त हो। न्यूनतम समर्थन मूल्य किसान की उपज का वह मूल्य है, जिसका निर्धारण सरकार इसलिए करती है कि किसानों को उनकी फसल का उचित मूल्य मिल सके और इसे सुनिश्चित करने के लिए सरकार किसानों से कपास खुद खरीदती है। अब यहां दो बाते हैं: पहली यह कि सरकार कपास का न्यूनतम समर्थन मूल्य कितना तय करती है और दूसरी यह कि इस मूल्य पर सरकार किसानों से कितना कपास खरीदती है!

सरकार न्यूनतम समर्थन मूल्य का निर्धारण ए-2 एफएल फार्मूले के आधार पर करती है। इसके अनुसार, मध्यम रेशे के कपास का न्यूनतम समर्थन मूल्य वर्ष 2024-25 के लिए 7,121 रुपए प्रति कुंतल निर्धारित किया गया है। मगर किसान संगठनों की मांग है कि यह सी-2 फार्मूले के आधार पर निर्धारित किया जाना चाहिए, जिसके अनुसार यह मूल्य 10,075 रुपए प्रति कुंतल होना चाहिए। मालूम हो कि न्यूनतम समर्थन मूल्य के निर्धारण के लिए सी-2 का फार्मूला डा एमएस स्वामीनाथन ने सुझाया था। भारत में कपास की खेती मुख्यतः लगभग 99 फीसद खरीफ फसल के रूप में होती है, जबकि तमिलनाडु और उसके आसपास के दूसरे राज्यों के कुछ हिस्सों में यह रबी की फसल है। भारत में लगभग साठ लाख किसान परिवार कपास की खेती से अपनी आजीविका चलाते हैं। इसके अतिरिक्त 4-5 करोड़ दूसरे लोग भी इसके व्यापार से जुड़े हैं। यहां पिछले वर्ष कुल 114.47 लाख हेक्टेयर कृषि योग्य जमीन पर कपास की खेती की गई, जो पूरी दुनिया में कपास की खेती के रकबे 314.79 लाख हेक्टेयर का 36.36 फीसद है। रकबे के लिहाज से भारत पूरी दुनिया में पहले स्थान पर है और उत्पादन के मामले में चीन के बाद दूसरे स्थान पर है। मगर यहां प्रति हेक्टेयर कपास की पैदावार (437 किग्रा प्रति हेक्टेयर) विश्व की औसत पैदावार (833 किग्रा प्रति हेक्टेयर) से काफी कम है।

पिछले दस वर्षों में सरकार ने न्यूनतम समर्थन मूल्य पर कपास की खरीद पर कुल 1,17,348.13 करोड़ खर्च किए। यह एक निवेश की तरह है, सीसीआइ किसानों से कपास खरीद कर इसे बाजार में बेचती है। मगर किसानों की आर्थिक स्थिति लगातार बिगड़ती जा रही है। इस साल के पहले तीन माह में महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र के करीब 767 किसानों ने आत्महत्या कर ली। बीते दशक में कपास का कुल उत्पादन 3370.72 लाख गांठें (एक गांठ-170 किग्रा) रहा और न्यूनतम समर्थन मूल्य पर कुल खरीद मात्र 380.58 लाख गांठें। इस तरह कपास का प्रति वर्ष औसत उत्पादन रहा 337 गांठें और न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीद केवल 38 गांठें। यानी कुल उपज का मात्र 11.27 फीसद कपास ही सरकार की ओर से खरीदा गया। यही नहीं, प्रति वर्ष कपास की खेती करने वाले लगभग साठ लाख किसानों में से केवल 7.88 लाख किसानों से ही न्यूनतम समर्थन मूल्य पर कपास की खरीददारी की गई। इन हालात में किसानों के हित की रक्षा कैसे होगी?

**प्रश्न – भारतीय कपास किसानों की क्या-क्या समस्याएं है? इनसे निजात पाने के लिए सरकार के पहल का उल्लेख करें।**

**38 Marks**

# पुतिन का दौरा : अमेरिका से संतुलन के बीच आगे की राह

जनसत्ता संवाद

रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की भारत यात्रा के अंत में दोनों देशों ने 70 बिंदुओं वाला एक संयुक्त बयान जारी किया। बयान में व्यापार और आर्थिक साझेदारी पर जोर दिया गया है। दोनों देशों के बीच व्यापार, परमाणु ऊर्जा, ईंधन, मुक्त व्यापार समझौता, कुशल कामगारों की आवाजाही से लेकर रक्षा सहयोग पर चर्चा हुई।

विदेश सचिव विक्रम मिसरी के मुताबिक, 'इस यात्रा का मुख्य फोकस आर्थिक मुद्दों पर था, हमारा उद्देश्य था औद्योगिक और निवेश साझेदारी को मजबूत करना। आज दुनिया में आपूर्ति शृंखला और व्यापारिक रिश्ते दबाव में हैं, निवेश अनिश्चित हो रहा है। दोनों नेताओं ने कुशल कामगारों की आवाजाही को आसान बनाने वाले समझौतों की सराहना की। साथ ही लक्ष्य रखा गया कि 2030 तक द्विपक्षीय व्यापार 100 अरब डालर तक पहुंचे। 2024-25 में यह व्यापार 68.7 अरब डालर के स्तर पर था।'

जानकारों की राय में अमेरिकी शुल्क से भारतीय वस्तुओं के निर्यात को नुकसान पहुंच रहा है और निवेश संबंधी अनिश्चितता बढ़ रही है, इसलिए रूस के राष्ट्रपति की नई दिल्ली यात्रा भारत को अपने निर्यात में और अधिक विविधता लाने का अवसर प्रदान कर सकती है। रूस के साथ बढ़ते व्यापार घाटे को भी पाट सकती है, जो मुख्य रूप से यूक्रेन युद्ध के बाद कच्चे तेल के आयात में वृद्धि के कारण है।

पुतिन की दो दिवसीय यात्रा भारत और रूस के नेतृत्व वाले यूरेशियन आर्थिक संघ (ईएईयू) द्वारा इस वर्ष अगस्त में संदर्भ की शर्तों (टीओआर) पर हस्ताक्षर किए जाने के बाद हुई है, जो एक मुक्त व्यापार समझौते के लिए वार्ता को फिर से शुरू करने का प्रतीक है। यह फरवरी 2022 में यूक्रेन युद्ध शुरू होने पर रुकी हुई थी। पांच ट्रिलियन डालर के ईएईयू समूह में रूस, आर्मेनिया, बेलारूस, कजाकिस्तान और किर्गिज गणराज्य शामिल हैं।

अमेरिका के साथ बातचीत जारी रहने के साथ ही, नई दिल्ली ने ज्यादा से ज्यादा बाजार हासिल करने की कोशिश शुरू कर दी है। यूरोपीय संघ, ब्रिटेन, जापान और चीन के साथ, रूस भी नई दिल्ली के प्रमुख लक्षित बाजारों में से एक है। रूस भारत से वस्तुओं और सेवाओं का आयात बढ़ाकर भारत के साथ व्यापारिक संबंधों को संतुलित करने का लक्ष्य लेकर चल रहा है। क्रेमलिन के डिप्टी चीफ आफ स्टाफ मैक्सिम ओरेश्किन का कहना है कि भारत और रूस के बीच घनिष्ठ व्यापारिक संबंध संबंधों को विकसित करने में एक रणनीतिक विकल्प हैं। रूसी कृषि मंत्री ओक्साना लुट के मुताबिक, रूस भारत से झींगा, चावल और उष्णकटिबंधीय फलों का आयात बढ़ाने के लिए तैयार है। ट्रंप के शुल्क से भारत के निर्यातकों को वैकल्पिक बाजार तलाशने पर मजबूर होना पड़ा है। तेल की अहमियत को कम करने के इरादे से भारत और रूस एक मुक्त व्यापार समझौते पर काम कर रहे हैं।

दौरे में रक्षा सौदों की घोषणा की उम्मीद थी, लेकिन ज्यादा कुछ नहीं हुआ। बयान में संयुक्त उत्पादन, तकनीक हस्तांतरण और दोस्ताना देशों को निर्यात का जिक्र है। एस 400 और एस 500 सौदे पर कोई चर्चा नहीं हुई। भारत को रूस से परमाणु पनडुब्बी भी इस साल मिलनी थी, लेकिन अब 2028 तक आने की उम्मीद है। हालांकि, विशेषज्ञ मानते हैं कि रिश्ता अब सिर्फ खरीद-बिक्री का नहीं, बल्कि संयुक्त उत्पादन का हो रहा है।

## भारत-रूस व्यापार चुनौतियां

सबसे बड़ी चुनौती पश्चिमी प्रतिबंधों के डर से रूस के साथ व्यापार को सुविधाजनक बनाने में निजी बैंकों की अनिच्छा रही है। अधिकांश निजी बैंकों के पश्चिमी देशों में महत्त्वपूर्ण व्यावसायिक हित हैं और उनकी कई शाखाएं हैं, जिन पर यूरोपीय संघ और अमेरिका द्वारा प्रतिबंध लगाए जा सकते हैं। निर्यातकों ने शुरुआत में शिकायत की थी कि आरबीआइ ने यह व्यवस्था शुरू तो कर दी थी, लेकिन बैंकों के लिए मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) के अभाव के कारण वे इसका इस्तेमाल नहीं कर पा रहे थे।

# नई सुरक्षा नीति : पश्चिमी गोलार्ध में पकड़ की फिराक में ट्रंप

**जनसत्ता संवाद**

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के प्रशासन ने एक नई राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति तैयार की है, जो यूरोपीय सहयोगियों को कमजोर बताती है और इसका उद्देश्य पश्चिमी गोलार्ध में अमेरिका के प्रभुत्व को पुनः स्थापित करना है।

वाइट हाउस द्वारा जारी किए गए इस दस्तावेज से आशंका है कि यूरोप में अमेरिका के पुराने सहयोगी नाराज होंगे, क्योंकि इसमें उनके प्रवासन और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की नीतियों की तीखी आलोचना की गई है, तथा सुझाव दिया गया है कि उन्हें 'सभ्यता के विनाश की आशंका' का सामना करना पड़ रहा है। इसके साथ ही अमेरिकी साझेदार के रूप में उनकी यूरोपीय सहयोगियों की दीर्घकालिक विश्वसनीयता पर संदेह किया गया है।

इस दस्तावेज में ट्रंप के 'अमेरिका प्रथम' विचार का समर्थन किया गया है, जो विदेशों में हस्तक्षेप न करने का पक्षधर है, दशकों के रणनीतिक संबंधों पर सवाल उठाता है और अमेरिकी हितों को सबसे ऊपर रखता है। दस्तावेज में कहा गया है कि अमेरिकी रणनीति 'सबसे पहले अमेरिका के लिए क्या कारगर है – या, दो शब्दों में कहें तो 'अमेरिका प्रथम' से प्रेरित है।'

जनवरी में रिपब्लिकन राष्ट्रपति के पदभार ग्रहण करने के बाद से, यह पहली राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति है। यह एक ऐसा दस्तावेज है जिसे प्रशासन को कानूनन जारी करना जरूरी है। यह पूर्व डेमोक्रेटिक राष्ट्रपति जो बाइडेन के प्रशासन द्वारा निर्धारित दिशा-निर्देशों से बिल्कुल विपरीत है, जिसका उद्देश्य ट्रंप के पहले कार्यकाल में कई गठबंधनों के टूटने के बाद उन्हें फिर से मजबूत करना और रूस पर लगाम लगाना था।

इंडिगो संकट पर सुनवाई से सुप्रीम कोर्ट का इनकार, कहा

# सरकार ने संज्ञान लिया, समय पर की कार्रवाई

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 8 दिसंबर।

इंडिगो की सैकड़ों उड़ानें लगातार सातवें दिन भी बड़ी संख्या में रद्द हो रही हैं। इस मामले पर सुप्रीम कोर्ट ने याचिका लगाकर दखल देने का आग्रह किया गया था। सुप्रीम कोर्ट ने मामले में न्यायिक हस्तक्षेप के अनुरोध वाली याचिका पर सोमवार को तत्काल सुनवाई से इनकार कर दिया और कहा कि केंद्र ने स्थिति का संज्ञान लिया है और इसके समाधान के लिए कदम उठाए हैं। शीर्ष अदालत ने यह भी कहा कि वह इस तथ्य से अवगत है कि लाखों लोग विभिन्न हवाई अड्डों पर परेशानी झेल रहे हैं।

प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत ने कहा कि यह एक गंभीर मामला है। लाखों लोग हवाई अड्डों पर परेशानी झेल रहे हैं। हम जानते हैं कि भारत सरकार ने समय पर कार्रवाई की है और इस मुद्दे का संज्ञान लिया है। हम समझते हैं कि लोगों को स्वास्थ्य संबंधी और अन्य महत्त्वपूर्ण समस्याएं हो सकती हैं। एक वकील ने इस मुद्दे का उल्लेख किया और कहा कि पिछले कुछ दिनों में इंडिगो द्वारा कई उड़ानें रद्द की गई हैं और यात्रियों को परेशानी झेलनी पड़ रही है। उड़ानों के रद्द होने की सूचना यात्रियों को नहीं दी गई। देशभर के 95 हवाई अड्डों पर लगभग 2,500 उड़ानों में देरी के कारण यात्रियों को परेशानी हो रही है।

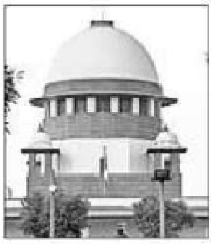

*प्रधान* न्यायाधीश सूर्यकांत ने कहा कि यह एक गंभीर मामला है। लाखों लोग हवाई अड्डों पर परेशानी झेल रहे हैं। हम जानते हैं कि भारत सरकार ने समय पर कार्रवाई की है और इस मुद्दे का संज्ञान लिया है। हम समझते हैं कि लोगों को स्वास्थ्य संबंधी और अन्य महत्त्वपूर्ण समस्याएं हो सकती हैं।

*इंडिगो* दो दिसंबर से सैकड़ों उड़ानें रद्द करने को लेकर सरकार और यात्रियों दोनों की आलोचना झेल रही है। कंपनी ने पायलटों की नई उड़ान ड्यूटी और नियमों में बदलाव का हवाला दिया है।

सूत्रों ने बताया कि इंडिगो की उड़ानों में व्यवधान सातवें दिन भी जारी रहा और सोमवार को विमानन कंपनी ने दिल्ली और बंगलुरु हवाई अड्डों से 250 से अधिक उड़ानें रद्द कर दीं। दिल्ली हवाई अड्डे से कुल 134 उड़ानें रद्द की गईं, जिनमें रवाना होने वाली 75 और पहुंचने वाली 59 उड़ानें शामिल हैं। बंगलुरु हवाई अड्डे से 127 उड़ानें रद्द की गईं, जिनमें रवाना होने वाली 62 और पहुंचने वाली 65 उड़ानें शामिल हैं।

इंडिगो दो दिसंबर से सैकड़ों उड़ानें रद्द करने को लेकर सरकार और यात्रियों दोनों की आलोचना झेल रही है। कंपनी ने पायलटों की नई उड़ान ड्यूटी और नियमों में बदलाव का हवाला दिया है। उड़ानें रद्द होने के कारण लाखों यात्री देशभर के हवाई अड्डों पर फंस गए हैं।

## गोगोई ने इंडिगो का मुद्दा लोकसभा में उठाया

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 8 दिसंबर।

लोकसभा में कांग्रेस के उप नेता गौरव गोगोई ने इंडिगो एअरलाइन से जुड़े संकट का विषय सोमवार को लोकसभा में उठाया और सरकार से जवाब की मांग की। इस पर अध्यक्ष ओम बिरला ने कहा कि नागरिक उड्डयन मंत्री राम मोहन नायडू इस संबंध में विस्तृत वक्तव्य देंगे।

गोगोई ने यह विषय उठाते हुए कहा कि नागरिक उड्डयन मंत्री बताएं कि हर हवाई अड्डे पर इतनी अव्यवस्था क्यों है? उनका कहना था, 'कहा गया था कि हवाई चप्पल वाले हवाई यात्रा करेंगे, लेकिन आज उड़ानों का किराया 20 हजार रुपए है, काफी के दाम ढाई सौ रुपए हैं।' इस पर बिरला ने कहा, राममोहन नायडू आज राज्यसभा में हैं। वह आज बयान दे रहे हैं, आप लोग चाहेंगे तो मंगलवार को विस्तृत बयान देंगे।

# केंद्र ने पिछले 11 वर्ष में अल्पसंख्यकों पर 7,641 करोड़ खर्च किए : कुरियन

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 8 दिसंबर।

राज्यसभा में सोमवार को अल्पसंख्यक मामलों के राज्य मंत्री जार्ज कुरियन ने बताया कि केंद्र ने सिख समुदाय और अन्य अल्पसंख्यकों के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए कुल 10,225.83 करोड़ रुपए खर्च किए हैं, जिसमें से पिछले 11 वर्षों में स्व-रोजगार आय सृजन परियोजनाओं के लिए 7,641 करोड़ रुपए के रियायती ऋण शामिल हैं।

अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालय के तहत राष्ट्रीय अल्पसंख्यक विकास और वित्त निगम (एनएमडीएफसी) सिख समुदाय और अन्य अधिसूचित अल्पसंख्यक समुदायों के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए योजनाओं को लागू करता है। उच्च सदन में कुरियन ने प्रश्नकाल के दौरान एक पूरक प्रश्न के उत्तर में कहा, '1994 में अपनी शुरुआत से, एनएमडीएफसी ने अपनी विभिन्न योजनाओं के तहत 10,225.83 करोड़ रुपए वितरित किए हैं, जिनमें से 27.35 लाख परिवारों को कवर किया गया है।' उन्होंने कहा, 'इसमें से, पिछले 11 वर्षों में 7,641 करोड़ रुपए अल्पसंख्यक समुदायों की भलाई के लिए वितरित किए गए हैं, जिनमें सिख समुदाय भी शामिल हैं।'

कुरियन ने यह भी कहा कि भारत सरकार सभी लोगों का ध्यान रख रही है और उसने पाकिस्तान से आए लोगों को 1,073 दीर्घकालिक वीजा (एलटीवी) जारी किए हैं। उन्होंने कहा, 'नागरिकता (संशोधन) अधिनियम (सीएए) के तहत, 337 नागरिकता भी दी गई है।'

## दोनों देशों ने संघर्ष विराम समझौता तोड़ा

# थाईलैंड ने कंबोडिया की सीमा के पास शुरू किए हवाई हमले

बैंकाक, 8 दिसंबर (एपी)।

थाईलैंड ने सोमवार को कंबोडिया से लगती विवादित सीमा पर हवाई हमले शुरू किए। दोनों पक्षों ने एक-दूसरे पर उस संघर्ष विराम समझौते को तोड़ने का आरोप लगाया, जिसके कारण पहले हुई लड़ाई रुक गई थी। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा अक्तूबर में कराए गए एक संघर्ष विराम समझौते के बाद भी दोनों देशों के बीच तनाव बना हुआ है। इससे पहले दोनों दक्षिण-पूर्व एशियाई पड़ोसी देशों के बीच क्षेत्रीय विवाद के कारण जुलाई में पांच दिनों तक संघर्ष हुआ था, जिसमें कई सैनिक और आम नागरिक मारे गए थे। थाई रक्षा मंत्रालय ने कहा कि 50,000 से अधिक लोग सीमा के निकटवर्ती क्षेत्रों को छोड़कर आश्रय स्थलों में चले गए हैं तथा माना जा रहा है कि और भी लोग अन्यत्र अपने रिश्तेदारों के यहां चले गए हैं।

वहीं, कंबोडिया के सूचना मंत्री नेथ फेकट्रा ने कहा कि सीमा के निकट के कई गांवों के निवासियों को वहां से निकाल लिया गया है। अधिकारियों ने बताया कि ताजा झड़पों में कम से कम एक थाई सैनिक और चार कंबोडियाई नागरिक मारे गए हैं। थाईलैंड के प्रधानमंत्री अनुतिन चार्नविराकुल ने टेलीविजन पर एक भाषण में कहा कि देश की रक्षा और सार्वजनिक सुरक्षा के लिए आवश्यकतानुसार सैन्य अभियान चलाए जाएंगे। उन्होंने कहा, 'थाईलैंड कभी हिंसा नहीं चाहता। मैं दोहराना चाहूंगा कि थाईलैंड ने कभी कोई लड़ाई या आक्रमण शुरू नहीं किया है, लेकिन वह अपनी संप्रभुता का उल्लंघन कभी बर्दाश्त नहीं करेगा।' नवंबर की शुरुआत में थाई सैनिकों के बारूदी सुरंगों की चपेट में आने के बाद संघर्षविराम पर खतरा पैदा हो गया था, जिसके कारण थाईलैंड ने घोषणा की कि वह संघर्षविराम समझौते के कार्यान्वयन को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर देगा। दोनों पक्ष एक-दूसरे पर पहले हमला करने का आरोप लगा रहे हैं। ट्रंप ने नवंबर के मध्य में कहा था कि उन्होंने दोनों देशों के बीच युद्ध को रुकवा दिया है जबकि तनाव अब भी बना हुआ है। रविवार को सीमा पर एक और झड़प हुई, जिसके बाद दोनों देशों ने एक-दूसरे पर पहले गोली चलाने का आरोप लगाया। थाई सेना ने कहा कि कंबोडियाई गोलीबारी में उसके दो सैनिक घायल हुए और उसके जवाब में थाई सैनिकों ने पलटवार किया।

*थाईलैंड* और कंबोडिया के बीच जंग की शुरुआत हो गई है। थाईलैंड ने कंबोडिया के साथ लगते सीमा के इलाके में हवाई हमले की है। तनाव बढ़ने के बाद दोनों देशों ने एक-दूसरे पर पहले हमला करने का आरोप लगाया।

### *सीमा को लेकर दशकों से विवाद*

थाईलैंड और कंबोडिया के बीच 800 किलोमीटर लंबी सीमा को लेकर दशकों से विवाद बना हुआ है। दोनों देशों के बीच विवाद 1904-1907 के फ्रांसो-सियामी संधि के बाद पैदा हुआ, जब फ्रांस ने कंबोडिया (तत्कालीन फ्रेंच इंडोचाइना) और सियाम (आधुनिक थाईलैंड) के बीच सीमा निर्धारित की थी। इस संधि के आधार पर सीमा को प्राकृतिक जल विभाजक रेखा के अनुसार खींचा गया, लेकिन थाईलैंड ने बाद में इन नक्शों को अस्वीकार कर दिया। 1962 में इंटरनेशनल कोर्ट आफ जस्टिस (आइसीजे) ने प्रेह विहार मंदिर को कंबोडिया को सौंप दिया, लेकिन थाईलैंड ने आसपास के क्षेत्रों पर दावा बनाए रखा। वर्ष 2008 में यूनेस्को द्वारा प्रेह विहार को विश्व धरोहर स्थल घोषित करने के बाद भी झड़पें हुईं, जिसमें दर्जनों मौतें हुईं। इस साल मई से लेकर जुलाई के दौरान सीमा पर हिंसक झड़प हुई। जुलाई में पांच दिनों तक दोनों देशों के बीच युद्ध चला। इस युद्ध में कई लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी। बाद में ट्रंप की पहल पर दोनों देशों के बीच संघर्ष विराम समझौता हुआ था।

# भारत-रूस संबंधों पर चीन सकारात्मक, मजबूत त्रिपक्षीय सहयोग का आह्वान

बेजिंग, 8 दिसंबर (भाषा)।

चीन ने रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की हालिया भारत यात्रा पर सोमवार को सकारात्मक प्रतिक्रिया दी। उसने तीनों देशों को 'ग्लोबल साउथ' का अहम हिस्सा करार देते हुए कहा कि मजबूत त्रिपक्षीय संबंध क्षेत्रीय और वैश्विक शांति एवं स्थिरता के साथ-साथ उनके अपने राष्ट्रीय हितों के लिए भी फायदेमंद हैं।

गुओ जियाकुन

चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता गुओ जियाकुन ने बेजिंग में संवाददाताओं से कहा, 'चीन, रूस और भारत न सिर्फ उभरती अर्थव्यवस्थाएं हैं, बल्कि 'ग्लोबल साउथ' का अहम हिस्सा भी हैं। यह पिछले हफ्ते पुतिन की हाई-प्रोफाइल भारत यात्रा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ उनकी बातचीत पर चीन की ओर से पहली प्रतिक्रिया है।

गुओ ने कहा कि तीनों देशों के बीच मजबूत रिश्ते न केवल उनके अपने हितों के अनुरूप हैं, बल्कि क्षेत्रीय और वैश्विक शांति, सुरक्षा, स्थिरता एवं समृद्धि के लिए भी फायदेमंद हैं। रूस के साथ चीन के मजबूत संबंधों के मद्देनजर बेजिंग की पुतिन की भारत यात्रा पर करीबी नजर थी।

भारत यात्रा से पहले पुतिन की ओर से नई दिल्ली और बेजिंग के बारे में की गई टिप्पणियों से जुड़े सवाल पर गुओ ने कहा कि चीन द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ावा देने के लिए रूस और भारत के साथ मिलकर काम करने के लिए तैयार है।

दो महीने की बड़ी गिरावट, सूचकांक 610 अंक लुढ़का

# शेयर बाजार में गिरावट से निवेशकों के 7.12 लाख करोड़ रुपए डूबे

मुंबई, 8 दिसंबर (भाषा)।

दो कारोबारी सत्रों की तेजी के बाद सोमवार को मुनाफावसूली होने से शेयर बाजारों में भारी गिरावट आने से निवेशकों की संपत्ति 7.12 लाख करोड़ रुपए कम हो गई। बीएसई का 30 शेयरों वाला मानक सूचकांक 609.68 अंक यानी 0.71 फीसद टूटकर 85,102.69 अंक पर बंद हुआ। इस गिरावट के बीच बीएसई में सूचीबद्ध कंपनियों का कुल बाजार पूंजीकरण 7,12,514.68 करोड़ रुपए घटकर 4,64,19,108.91 करोड़ रुपए यानी 5.15 लाख करोड़ डालर रह गया।

मोतीलाल ओसवाल फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड में संपत्ति प्रबंधन के शोध प्रमुख सिद्धार्थ खेमका ने कहा कि बाजार में व्यापक गिरावट की वजह अमेरिकी फेडरल रिजर्व के दर निर्णय से पहले सतर्क रुख, विदेशी निवेशकों की लगातार बिकवाली और पूरे बाजार में तेज मुनाफावसूली रही।

लगातार दो सत्रों की बढ़त के बाद सोमवार को घरेलू शेयर बाजार में तेज गिरावट हुई और सेंसेक्स 610 अंक लुढ़क गया जबकि निफ्टी 26,000 के स्तर से नीचे आ गया। ऊंचे स्तर पर मुनाफावसूली और विदेशी निवेशकों की बिकवाली जारी रहने से बाजार पर दबाव बढ़ गया। विश्लेषकों ने कहा कि इस सप्ताह अमेरिकी फेडरल रिजर्व की नीतिगत बैठक से पहले निवेशकों ने सतर्क रुख अपनाया है। इससे बाजार धारणा और कमजोर हुई। बीएसई में सूचबद्ध कंपनियों का कुल बाजार पूंजीकरण 7 लाख करोड़ रुपये घटकर 464 लाख करोड़ रुपये रह गया। बीएसई का 30 शेयरों पर आधारित मानक सूचकांक सेंसेक्स 609.68 अंक यानी 0.71 फीसद गिरकर 85,102.69 अंक पर बंद हुआ।

### *इंडिगो का शेयर करीब नौ फीसद लुढ़का*

इंडिगो एअरलाइन का संचालन करने वाली कंपनी इंटरग्लोब एविएशन के शेयर में सोमवार को लगभग नौ फीसद की भारी गिरावट आई, जिससे इसका बाजार मूल्यांकन 17,884.76 करोड़ रुपए कम हो गया। देश की सबसे बड़ी एअरलाइन इंडिगो के परिचालन में पिछले एक हफ्ते से बड़े पैमाने पर व्यवधान देखा जा रहा है। इस दौरान सैकड़ों उड़ानें रद्द करनी पड़ रही हैं। इसके असर से कंपनी का शेयर एनएसई पर 8.62 फीसद की गिरावट के साथ 4,907.50 रुपए पर बंद हुआ। वहीं, बीएसई पर यह शेयर 8.28 फीसद की गिरावट के साथ 4,926.55 रुपए पर बंद हुआ।

Source:- दैनिक जागरण

# हर माह की पहली तारीख को मिलेगा सभी छह लाख शिक्षकों को वेतन

## सभी कोटि के शिक्षकों पर होगा लागू, डीईओ व डीपीओ को जारी किया गया निर्देश

**तैयारी**

राज्य ब्यूरो, जागरण • पटना : राज्य के सभी सरकारी विद्यालयों में कार्यरत तकरीबन छह लाख शिक्षकों को अब हर महीने की पहली तारीख को वेतन मिलेगा। उनके बैंक खाते में वेतन की राशि जाएगी। यह सुविधा सभी कोटि के शिक्षकों पर लागू होगी। इससे संबंधित मानक कार्य प्रणाली शिक्षा विभाग ने सोमवार को सभी जिलों को जारी किया। प्राथमिक शिक्षा निदेशक साहिला ने सभी जिला शिक्षा पदाधिकारियों (डीईओ) और जिला कार्यक्रम पदाधिकारियों (डीपीओ) को संबंधित निर्देश का अनुपालन सुनिश्चित करने को कहा है।

निर्देश मुताबिक पुराने वेतनमान वाले नियमित शिक्षकों के वेतन भुगतान हेतु हर माह के 20 से 25 तारीख के बीच डीईओ कार्यालय को शिक्षकों की अनुपस्थिति विवरणी प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी (बीईओ)

द्वारा सौंपी जाएगी। 25 तारीख तक डीपीओ (स्थापना) द्वारा वेतन विपत्र तैयार कर 26 तारीख को कोषागार में प्रस्तुत किया जाएगा, जिसे कोषागार पदाधिकारी द्वारा 30 तारीख तक स्वीकृत किया जाएगा और एक तारीख को शिक्षकों के खाते में राशि भेजी जाएगी।

वहीं, राज्यकोष से वेतन प्राप्त करने वाले नियोजित शिक्षकों के वेतन भुगतान हेतु हर माह के 20 से 25 तारीख के बीच डीईओ कार्यालय को शिक्षकों की अनुपस्थिति विवरणी बीईओ द्वारा सौंपी जाएगी। 25 तारीख तक डीपीओ (स्थापना) द्वारा वेतन विपत्र तैयार कर 26 तारीख को कोषागार में प्रस्तुत किया जाएगा, जिसे कोषागार पदाधिकारी द्वारा 30 तारीख तक स्वीकृत किया जाएगा। 26 से 29 तारीख डीईओ कार्यालय द्वारा बैंक को भेजा जाने वाला एडवाइस तैयार किया जाएगा, जो 30 तारीख तक बैंक को भेजा जायेगा। एक तारीख तक शिक्षकों के खाते में वेतन की राशि भेजी जाएगी। जबकि, समग्र शिक्षा के कोष से वेतन प्राप्त करने वाले नियोजित शिक्षकों एवं नियमित वेतनमान वाले स्नातक प्रशिक्षित शिक्षकों के वेतन भुगतान हेतु 20 से 22 तारीख के बीच डीईओ कार्यालय को शिक्षकों की अनुपस्थिति विवरणी बीईओ द्वारा सौंपी जाएगी। 25 से 28 तारीख तक डीईओ कार्यालय द्वारा बैंक को भेजा जाने वाला एडवाइस तैयार किया जाएगा, जो 29 तारीख तक बैंक को भेजा जाएगा। एक तारीख तक शिक्षकों के खाते में वेतन की राशि भेजी जाएगी।

### संस्कृत व मदरसा शिक्षकों को भी मिलेगी यह सुविधा

शिक्षा विभाग के निर्देश के मुताबिक, राज्य के अल्पसंख्यक विद्यालयों, संस्कृत विद्यालयों एवं मदरसों में कार्यरत शिक्षकों को भी अब हर माह की पहली तारीख को वेतन भुगतान होगा। हर माह के 20 से 22 तारीख के बीच डीईओ कार्यालय को शिक्षकों की अनुपस्थिति विवरणी बीईओ द्वारा सौंपी जाएगी। 25 तारीख तक डीपीओ (स्थापना) द्वारा वेतन विपत्र तैयार कर 26 तारीख को कोषागार में प्रस्तुत किया जाएगा, जिसे कोषागार पदाधिकारी द्वारा 30 तारीख तक स्वीकृत किया जाएगा। एक तारीख तक शिक्षकों के खाते में वेतन की राशि भेजी जाएगी। राज्यकोष से वेतन प्राप्त करने वाले रात्रि प्रहरियों के वेतन भुगतान हेतु हर माह की पहली तारीख को होगा।

सड़कों से अवैध पार्किंग हटाने के लिए निजी क्रेन भी लगाए जाएंगे

# सभी शहरों और पंचायतों के प्रवेश और निकास स्थल पर लगेंगे कैमरे : सम्राट

## यातायात सुधार के उपाय

राज्य ब्यूरो, जागरण • पटना : राज्य के सभी शहरी निकायों और पंचायतों के प्रवेश एवं निकास स्थल पर अनिवार्य रूप से सीसीटीवी लगाए जाएंगे। उपमुख्यमंत्री सह गृह मंत्री सम्राट चौधरी ने पंचायती राज विभाग एवं नगर विकास विभाग के अधिकारियों को कैमरे स्थापित करने का निर्देश दिया है। इससे सड़क सुरक्षा तो मजबूत होगी ही, यातायात प्रणाली भी अधिक सुगम-सुचारू और नियंत्रित होगी।

गृह मंत्री ने सोमवार को ट्रैफिक सुधार के लिए अधिकारियों के साथ विस्तृत समीक्षा बैठक की। उन्होंने कहा कि राज्य में यातायात व्यवस्था को दुरुस्त करना सरकार की शीर्ष प्राथमिकता है।

आम जनता को जाम से मुक्ति दिलाने और सरल-सुगम यातायात व्यवस्था प्रदान करने के लिए हर स्तर पर कठोर कदम उठाए जाएं। गृह मंत्री सम्राट चौधरी ने गलत और अवैध पार्किंग से निपटने के लिए विभागीय क्रेन के साथ निजी क्रेन लगाने का भी निर्देश दिया।

- रेलवे स्टेशन और व्यस्त चौराहों की जाम से निबटने को बनेगा कमांड एंड कंट्रोल सेंटर
- यातायात प्रशिक्षण संस्थान की होगी स्थापना, सुधार के लिए कठोर कदम उठाने के दिए निर्देश

सम्राट चौधरी • जागरण आर्काइव

## ट्रैफिक पुलिस बल बढ़ेगा खुलेगा प्रशिक्षण संस्थान

सम्राट चौधरी ने राज्य में यातायात प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना का निर्देश देते हुए कहा कि ट्रैफिक पुलिसकर्मियों में दक्षता लाने के लिए ट्रेनिंग जरूरी है। उन्होंने ट्रैफिक पुलिस बल बढ़ाने की भी बात कही। राज्य के रेलवे जंक्शन के बाहर, व्यस्त चौराहों और जाम वाली जगहों पर यातायात प्रबंधन के लिए कमांड एंड कंट्रोल सेंटर स्थापित करने का निर्देश भी गृह मंत्री ने समीक्षा बैठक में दिया। उन्होंने कहा कि स्कूल, कालेज, पंचायत और शहरी क्षेत्रों में ट्रैफिक नियमों के प्रति लोगों के बीच व्यापक जागरूकता अभियान चलाया जाए। गृह मंत्री ने लगातार ट्रैफिक नियमों का उल्लंघन करने वालों पर सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिए। इसके साथ ही अवैध पार्किंग से निपटने के लिए विभागीय क्रेन के साथ प्राइवेट क्रेन लगाने पर भी बल दिया।

# पटना-पूर्णिया एक्सप्रेस वे को मंत्रालय से मिला नंबर

राज्य ब्यूरो, जागरण • पटना : पटना-पूर्णिया एक्सप्रेस वे को सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय ने नंबर के साथ अधिसूचित कर दिया है। यह एक्सप्रेस वे एनई-09 के नाम से जाना जाएगा। यह देश का नौवां एक्सप्रेस वे होगा। बिहार के लिए घोषित पांच एक्सप्रेस वे में यह दूसरा एक्सप्रेस वे है, जिसे नंबर दिया गया है। इसके पूर्व वाराणसी-कोलकाता एक्सप्रेस वे को सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय ने नंबर उपलब्ध कराया है।

**मामला अब पीपीपी अप्रेजल कमेटी के पास :** पटना-पूर्णिया एक्सप्रेस वे के निर्माण के लिए राशि की व्यवस्था को ले अब इसके प्रस्ताव को केंद्र सरकार के तहत काम करने वाली पीपीपी अप्रेजल कमेटी को भेजा गया है। यह कमेटी के अध्यक्ष आर्थिक मामलों के सचिव होते हैं।

**केंद्रीय कैबिनेट से अनुमति के बाद निविदा :** पीपीपी अप्रेजल कमेटी से पटना-पूर्णिया एक्सप्रेस वे को मंजूरी मिलने के बाद यह प्रस्ताव कैबिनेट की मंजूरी के लिए आएगा। कैबिनेट की मंजूरी के बाद इस प्रोजेक्ट के लिए निविदा होगी।

## एनई-9 से जाना जाएगा

- यह देश का नौवां एक्सप्रेस वे होगा, मामला अब पीपीपी एप्रेजल कमेटी के पास
- बिहार के लिए घोषित पांच एक्सप्रेस वे में यह दूसरा एक्सप्रेस वे है, जिसे नंबर दिया गया है

## छह जिलों से गुजरने वाले इस एक्सप्रेस वे के लिए जमीन अधिग्रहण प्रक्रिया में

छह जिलों से गुजरने वाले इस प्रोजेक्ट के लिए जमीन अधिग्रहण का मामला अभी प्रक्रिया में ही है। वैशाली जिले के सराय के समीप आरंभ होने वाली इस सड़क के लिए 2184 हेक्टेयर जमीन का अधिग्रहण होना है। इसमें 355 हेक्टेयर जमीन अधिग्रहण का मामला आगे बढ़ा है। समस्तीपुर में भी जमीन अधिग्रहण का मामला आगे बढ़ा है। मधेपुरा, दरभंगा, सहरसा व पूर्णिया जिले में भी इस प्रोजेक्ट के लिए जमीन अधिग्रहण किया जाना है पर मामला अभी गति में नहीं है।

## इस वर्ष जनवरी में मिली थी पटना-पूर्णिया एक्सप्रेस वे के एलायनमेंट को स्वीकृति

पटना-पूर्णिया एक्सप्रेस वे के एलायनमेंट को इस वर्ष 15 जनवरी को मंजूरी मिली थी। इस प्रोजेक्ट के लिए कुल 2184 .2 हेक्टेयर जमीन का अधिग्रहण होना है। वैशाली में 355 .06 हेक्टेयर, समस्तीपुर में 613 .98 हेक्टेयर, दरभंगा में 142 .93 हेक्टेयर, सहरसा में 414 .8 हेक्टेयर, मधेपुरा में 164 .21 तथा पूर्णिया में 493 .31 हेक्टेयर जमीन का अधिग्रहण होना है।

# लोक शिकायत निवारण में देरी पर 3 .27 लाख आर्थिक दंड

**जागरण संवाददाता, पटना :** डीएम डा. त्यागराजन एसएम ने बताया कि लोक शिकायत निवारण के 117 मामलों में लापरवाही पर अधिकारियों पर तीन लाख 27 हजार 300 रुपये आर्थिक दंड लगाया गया है। इसमें से दो लाख 76 हजार 900 रुपये जमा करा दिए गए हैं। जिन अधिकारियों ने अबतक दंड की राशि अबतक जमा नहीं की है, वे तुरंत करें नहीं तो वेतन से कटौती की जाएगी। उन्होंने लोक शिकायत निवारण पदाधिकारी को इस संबंध में कोषागार पदाधिकारी को पत्र देने को कहा है। यदि संबंधित अधिकारी दंड राशि जमा करने का साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराते हैं तो उनका वेतन रोक दिया जाएगा। इसके अलावा उन्होंने 25 मामलों में अनुशासनिक कार्रवाई की अनुशंसा की है। साथ ही उन्होंने 24 नवंबर से पांच दिसंबर के बीच लोक शिकायत निवारण की सुनवाई में अनुपस्थित

**14** अधिकारी सुनवाई में रहे अनुपस्थित, डीएम ने स्पष्टीकरण पत्र जारी कर अर्थदंड लगाने का दिया आदेश

**65** आरटीपीएस के मामले 60 दिन में नहीं हो सके निष्पादित, अन्य आवेदनों के त्वरित निष्पादन का दिया गया निर्देश

> लोक शिकायत निवारण अधिकार अधिनियम व आरटीपीएस संबंधी मामलों का तय समय पर गुणवत्तापूर्ण निष्पदान का आदेश दिया गया है। लोक कल्याणकारी योजनाओं की राशि मिलने में किसी प्रकार की शिथिलता, लापरवाही या अनियमितता बर्दाश्त नहीं की जाएगी। राशन कार्ड निर्माण में विलंब स्वीकार्य नहीं है।
>
> **-डा. त्यागराजन एसएम**, जिलाधिकारी

रहने वाले 14 अधिकारियों को स्पष्टीकरण, अर्थदंड व चेतावनी पत्र जारी करने का निर्देश दिया है। उन्होंने कहा कि यद्यपि सुनवाई में उपस्थिति का प्रतिशत 99.38 प्रतिशत है फिर भी किसी भी मामले में अनुपस्थिति स्वीकार्य नहीं होगी। डीएम ने सोमवार को लोक शिकायत निवारण एवं बिहार लोक सेवाओं का अधिकार अधिनियम (आरटीपीएस) से जुड़े मामलों की समीक्षा बैठक में ये निर्देश दिए। लोक शिकायत निवारण में 60 कार्य दिवस से अधिक का एक भी मामला लंबित नहीं था। गत सप्ताह 377 मामलों का निष्पादन हुआ जबकि 128 नए परिवाद प्राप्त हुए। समय-सीमा के अंदर प्रक्रियाधीन कुल मामले 2,456 हैं। प्रथम अपील में दायर 11,617 में से 11,372 मामलों का निष्पादन किया गया। द्वितीय अपील के 4,415 मामलों में 4,132 का निष्पादन हुआ और अन्य पर कार्रवाई जारी है।

## 65 मामलों का 60 दिन में नहीं हुआ निष्पादन

आरटीपीएस के 65 मामले ऐसे हैं, जिनका निष्पदान 60 दिन बाद भी लंबित है। इनमें फतुहा में मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना (एमकेवीवाई) के दो, पेंशन के 45 एवं एलपीसी (आफलाइन) का एक मामला; मसौढ़ी में राष्ट्रीय पारिवारिक लाभ योजना (आरपीएलवाई) के पांच, पंडारक में पेंशन के पांच; दानापुर में मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना (एमकेवीवाई) तीन मामले; मोकामा में श्रमिक दुर्घटना योजना के दो, दुल्हिनबाजार में मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना (एमकेवीवाई) का एक, पालीगंज में श्रमिक दुर्घटना योजना का एक मामला तिथिवाद हुआ है। डीएम ने अधिकारियों से स्पष्टीकरण मांगते हुए अविलंब नियमानुसार निष्पान का आदेश दिया। अनुमंडल पदाधिकारियों को अपने प्रखंडों में आरटीपीएस मामलों के निष्पादन की समीक्षा कर हर तिथिवाद आवेदन पर अलग-अलग जुर्माना लगा तीन दिन में रिपोर्ट देने को कहा गया है। उन्होंने कहा कि खाद्यान्न आपूर्ति व विधि-व्यवस्था अनुमंडल पदाधिकारियों का मुख्य कार्य है, इसमें किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उप विकास आयुक्त को तमाम मामलों के नियमित निरीक्षण का निर्देश दिया गया। 23 अंचलों में 12,937 संयुक्त कार्यवाहियों को पोर्टल पर अपलोड करने के साथ उन्होंने अंचलाधिकारियों व थानाध्यक्षों को संयुक्त शनिवारीय बैठकें कर भूमि विवादों के समाधान करने को कहा। जनता दरबार, सीपीग्राम तथा मुख्यमंत्री डैशबोर्ड से मिलीं शिकायतों के त्वरित निष्पादन का आदेश दिया गया।

# एसआइआर पर अनावश्यक आपत्ति

बलबीर पुंज

**ईवीएम पर संदेह, वोट चोरी के आरोप और अब एसआइआर का विरोध 'नाच न जाने, आंगन टेढ़ा' वाली कहावत को चरितार्थ करने जैसा है**

भारत का लोकतंत्र विश्व की सबसे विशाल जनइच्छा का प्रतिबिंब है। यहां चुनाव केवल सत्ता परिवर्तन का माध्यम नहीं, अपितु एक पवित्र राष्ट्रीय संस्कार है। एक-एक मत स्वस्थ लोकतांत्रिक व्यवस्था की धड़कन है। इसलिए मतदाता सूची की शुद्धता केवल भारतीय निर्वाचन आयोग का प्रशासनिक काम नहीं, बल्कि भारत के संवैधानिक आत्मा की सुरक्षा का भी प्रश्न है। इसी मूल भावना के साथ चुनाव आयोग ने इस वर्ष एक जुलाई से मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण यानी एसआइआर का व्यापक अभियान आरंभ किया, ताकि कोई अपात्र व्यक्ति इस सूची में शामिल न हो और कोई पात्र नागरिक छूट न जाए। बिहार के बाद 12 और राज्यों में यह प्रक्रिया जारी है। इससे पहले देश में वर्ष 2002-04 के बीच एसआइआर हुआ था। यह विडंबना है कि कुछ राजनीतिक दल और उनके शीर्ष नेता संविधान की प्रतियां लहराकर स्वयं को उसका 'रक्षक' साबित करने पर तुले रहते हैं, वहीं संसद के भीतर और बाहर इस वैधानिक चुनाव सुधार प्रक्रिया पर अनर्गल सवाल भी खड़े कर रहे हैं।

देशव्यापी एसआइआर के खिलाफ उच्चतम न्यायालय में भी मामले दायर हो गए हैं। विपक्षी दलों की ओर से इन मामलों की पैरवी कपिल सिब्बल और अभिषेक मनु सिंघवी जैसे दिग्गज कर रहे हैं। उनकी दलील है कि एसआइआर एक गैर-जरूरी प्रक्रिया है और चुनाव आयोग के पास इसे कराने का अधिकार नहीं है। उनकी इस दलील को अदालत ने खारिज कर दिया। इतना ही नहीं, न्यायालय ने 26 नवंबर की सुनवाई में यह भी रेखांकित किया कि बिहार में एसआइआर के दौरान जिन अपात्र मतदाताओं के नाम हटाए गए, उनमें से किसी एक ने भी कोई आपत्ति दर्ज नहीं कराई। अब चुनाव आयोग एसआइआर के दूसरे चरण में 12 राज्यों के 321 जिलों में 1,843 विधानसभा क्षेत्रों के लगभग 51 करोड़ मतदाताओं की समीक्षा कर रहा है। तीन दिसंबर तक इसके लिए 99 प्रतिशत फार्म वितरित और 93 प्रतिशत से अधिक डिजिटाइज किए जा चुके हैं। स्वतंत्र, निष्पक्ष और पारदर्शी प्रक्रिया सुनिश्चित करने के लिए आयोग अब तक 4,700 से अधिक सर्वदलीय बैठकों का आयोजन कर चुका है। इनमें 28,000 राजनीतिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। अंतिम मतदाता सूची आगामी 16 फरवरी को प्रकाशित होगी। जिन लोगों के नाम सूची से हटेंगे, उन्हें एक माह तक दावा-आपत्ति का अवसर मिलेगा। आखिर इतनी पारदर्शी प्रक्रिया से घबराहट कैसी? विरोधियों द्वारा पहले ईवीएम पर संदेह जताना, वोट चोरी का आरोप मढ़ना और अब एसआइआर का विरोध करना असल में और कुछ नहीं, बल्कि 'नाच न जाने, आंगन टेढ़ा' वाली कहावत को चरितार्थ करने जैसा है।

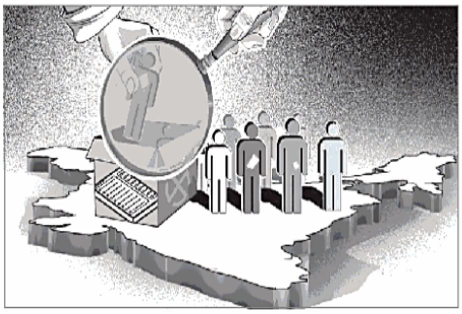

अवधेश राजपूत

लोकसभा चुनाव में मामूली सफलता के बाद से ही कांग्रेस को एक के बाद एक राज्यों में मुंह की खानी पड़ी है। कांग्रेस का यह क्षरण बिहार चुनाव तक कायम रहा, मगर वह आत्ममंथन के बजाय आरोप-प्रत्यारोप में लगी है। स्वतंत्रता के बाद देश पर कांग्रेस का 50 वर्षों तक प्रत्यक्ष-परोक्ष शासन रहा। इस दौरान कांग्रेस तमिलनाडु (1967), बंगाल (1977), उत्तर प्रदेश (1989), गुजरात (1990), महाराष्ट्र (1995), ओडिशा (2000), गोवा (2012) और दिल्ली (2013) में ही एक बार सत्ता से बाहर हुई, मगर अपने दम पर अब तक सत्ता में नहीं लौट सकी। दिल्ली में 2015, 2020 और 2025 के चुनावों में वह खाता तक नहीं खोल पाई।

पिछले चार लोकसभा चुनाव स्पष्ट रूप से भारत के बदलते राजनीतिक परिदृश्य को रेखांकित करते हैं। 2009 में भाजपा को 18.8 प्रतिशत मत और 116 सीटें मिली थीं। 2014 में भाजपा 31 प्रतिशत मतों के साथ 282 सीटों पर पहुंच गई, तो कांग्रेस 206 से घटकर 44 सीटों और 28.5 प्रतिशत मतों से गिरकर 19.3 प्रतिशत पर आ गई। दोनों चुनावों में केंद्र में कांग्रेसनीत संप्रग सरकार सत्ता में थी। भाजपा के प्रति जनसमर्थन 2019 में और प्रबल हुआ और उसने पहले से अधिक मतों (37.3 प्रतिशत) और सीटों (303) के साथ फिर बहुमत प्राप्त किया। 2024 का चुनाव भी भाजपा ने पीएम मोदी के नेतृत्व में सत्ता-विरोधी लहर, विपक्षी एकजुटता, भारत-विरोधी शक्तियों के प्रपंचों और नकारात्मक प्रचार के बीच लड़ा, जिसमें उसकी सीटें (240) और मत (36.5 प्रतिशत) दोनों घटे, पर सरकार बनाने में सफल रही।

ध्यान देने वाली बात यह भी है कि केंद्र में मोदी सरकार रहते हुए पिछले 11 वर्षों में कई राज्यों में विपक्षी दलों ने भी चुनाव जीते। बंगाल में तृणमूल, तमिलनाडु में द्रमुक, झारखंड में झामुमो, कर्नाटक-हिमाचल-तेलंगाना में कांग्रेस, जम्मू-कश्मीर में नेशनल कांफ्रेंस और केरल में वामपंथी आदि शामिल हैं। यहां तक कि 70 सदस्यीय दिल्ली विधानसभा के चुनाव में आप ने 2015 में 67 और 2020 में 62 सीटें जीतीं, तो 2022 में पंजाब की भी 80 प्रतिशत सीटें भी आप जीतने में सफल रही थी। यदि चुनाव आयोग किसी एक के लिए पक्षपाती होता, तो क्या ऐसे एकतरफा परिणाम संभव होते?

वास्तव में कांग्रेस नेतृत्व सहित अधिकांश विरोधी दल अपनी मूल समस्या को देखने-समझने की क्षमता खो चुके हैं। अहंकार और वंशवादी अधिकारबोध ने इन्हें आत्मविश्लेषण से वंचित कर दिया है। वे कल्पना में जीते हुए वास्तविकता से पूरी तरह कट गए हैं और अपनी हर चुनावी असफलता के लिए प्रधानमंत्री मोदी और चुनाव आयोग पर अनर्गल आरोप मढ़ रहे हैं। एक कटु सत्य यह भी है कि यदि किसी कारण मतदाताओं का भाजपा से मोहभंग होता भी है तो मतदाता कांग्रेस के बजाय अन्य विकल्प खोजते हैं। देखा जाए तो सपा, राजद, तृणमूल, द्रमुक, राकांपा, आप ने कांग्रेस की ही सियासी जमीन हथियार कर ही अपनी राजनीतिक जड़ें मजबूत की हैं। सच यह है कि जब 'लोक' अर्थात मतदाता बार-बार विपक्ष को नकार देता है, तब संगठित राजनीतिक रणनीति के तहत एक 'तंत्र' चुनाव आयोग जैसी संस्थाओं को कठघरे में खड़ा करता है। उद्देश्य केवल इतना है कि जनता से कटाव के बीच अपनी गिरती राजनीतिक प्रासंगिकता किसी तरह बची रहे, भले ही इसके लिए देश की संवैधानिक संस्थाओं की विश्वसनीयता को ही आघात क्यों न पहुंचे।

(लेखक वरिष्ठ स्तंभकार हैं)
response@jagran.com

# उप्र को हराकर बिहार ने दर्ज की पहली जीत

**सैयद मुश्ताक अली ट्राफी**

**जागरण संवाददाता, कोलकाता:** बिहार ने सैयद मुश्ताक अली ट्राफी के ग्रुप-बी मुकाबले में उत्तर प्रदेश को छह विकेट से हराकर उलटफेर किया। बिहार की यह लगातार छह हार के बाद पहली जीत है। इसी जीत के साथ बिहार अंक तालिका में चार अंक के साथ अपने ग्रुप में आठवें नंबर पर है।

प्लेयर आफ द मैच रहे पीयूष सिंह की 54 गेंदों में 57 रनों की पारी के दम पर बिहार ने 145 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए चार गेंद शेष रहते जीत हासिल कर ली। इससे पहले मंगल महरौर ने चार ओवर में 12 रन देकर तीन विकेट चटकाए, जिससे उत्तर प्रदेश छह विकेट पर 144 रन ही बना सका। महरौर को कप्तान साकीबुल गनी (1/20) और साकिब हुसैन (1/31) का अच्छा साथ मिला। इन दोनों ने अपने-अपने चार ओवरों में एक-एक विकेट लिया। आमोद यादव महंगे साबित हुए और उन्होंने एकमात्र सफलता के लिए 50 रन लुटाए। रिंकू की 19 रन पारी पर महरौर ने विराम लगाया। वहीं, लक्ष्य का पीछा करते हुए पीयूष और आयुष लोहारुका (36) की प्रारंभिक जोड़ी ने 11.3 ओवर में 83 रन जोड़कर बिहार को मजबूत शुरुआत दिलाई। पीयूष ने अपनी पारी में चार चौके और एक छक्का लगाया।

**दिल्ली का जीत के साथ अभियान खत्म:** यश ढुल और कप्तान नितीश राणा के अर्धशतक से दिल्ली ने सोमवार को सैयद मुश्ताक अली ट्राफी में अपने अभियान का अंत उत्तराखंड पर 18 रन की जीत के साथ किया। ढुल (52 रन) और राणा (51) ने टूर्नामेंट में अच्छा प्रदर्शन किया लेकिन टीम को अगले दौर में ले जाने में नाकाम रहे। दिल्ली ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में सात विकेट पर 162 रन बनाए और फिर उत्तराखंड को सात विकेट पर 144 रन पर रोक दिया। उत्तराखंड के लिए प्रशांत चोपड़ा ने सर्वाधिक 54 रन बनाए।

पीयूष सिंह ● बीसीसीआइ

## हरियाणा सुपर आठ में

**हैदराबाद:** मोहम्मद शमी ने 30 रन देकर चार विकेट चटकाते हुए प्रभावी प्रदर्शन किया, लेकिन इसके बावजूद हरियाणा ने ग्रुप सी मैच में बंगाल को आसानी से 24 रन से हराकर सुपर आठ में जगह बनाई। हरियाणा और पंजाब दोनों के ग्रुप में समान 20 अंक रहे, लेकिन पंजाब की टीम बेहतर नेट रन रेट के कारण शीर्ष पर रही। पंजाब का नेट रन रेट प्लस 2.716 जबकि हरियाणा का प्लस 0.409 रहा। शमी ने टूर्नामेंट में 16 विकेट चटकाए। उनकी शानदार गेंदबाजी के कारण एक समय 17 ओवर में चार विकेट पर 170 रन बनाकर मजबूत स्थिति में दिख रही हरियाणा की टीम नौ विकेट पर 191 रन ही बना सकी। मौजूदा टूर्नामेंट में शमी ने डेथ ओवरों में शानदार गेंदबाजी की है। हालांकि, पंजाब के विरुद्ध अभिषेक शर्मा ने उनके विरुद्ध काफी रन बटोरे थे। इसके जवाब में बंगाल की टीम 20 ओवर में 167 रन पर आलआउट हो गई। अंशुल कंबोज, इशांत भारद्वाज और सुमित ने दो-दो विकेट चटकाए।

**जागरण विशेष**

सुनेश ठाकुर • जागरण

# अब 45 मिनट में आ जाएगी डीएनए जांच की रिपोर्ट

## आइसर मोहाली के स्टार्टअप इंडोक्स साल्यूशंस ने तैयार की डीएनए जांच के लिए विशेष किट

**चंडीगढ़:** चिकित्सा, अनुसंधान या अन्य कारणों से बेहद महत्वपूर्ण माने जाने वाली डीएनए जांच की रिपोर्ट के लिए अब 24 या 72 घंटों तक इंतजार नहीं करना होगा। यह 35 से 45 मिनट में मिल जाएगी। विज्ञानियों ने ऐसी किट तैयार की है, जिससे 13 की जगह सिर्फ तीन टेस्ट लेने होंगे। समय की बचत के साथ खर्च भी 60 से 70 प्रतिशत तक कम आएगा। खास यह है कि इस किट को महत्वपूर्ण प्रयोगशाला तकनीक पीसीआर (पालीमरेज चेन रिएक्शन) के लिए भी तैयार किया जा रहा है, जिससे टाइफाइड, तपेदिक, इन्फ्लुएंजा, मलेरिया और डेंगू की जांच भी हो सकेगी।

मोहाली स्थित इंडियन इंस्टीट्यूट आफ साइंस एजुकेशन एंड रिसर्च (आइसर) के सहयोग से इंडोक्स साल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड के संस्थापक जिम्मी भांबरा की टीम ने इसे तैयार किया है। पंचकूला में आयोजित इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल में पेश इस विशेष किट को आइसर की लैब में तैयार किया गया है। इसके तहत सैंपल तैयार करने के लिए इन्नो एक्सट्रैक्ट (तरल रूप) और लैब के काम के लिए विशेष यंत्र (इंस्ट्रूमेंट) विकसित किए गए हैं, जो चंद मिनटों में डीएनए (डीआक्सीराइबोन्यूक्लिक एसिड) जांच की रिपोर्ट दे देंगे।

**इस तरह काम करती है तकनीक:** जिम्मी भांबरा बताते हैं कि अभी तक रक्त के नमूने लेने के बाद डीएनए निकालने के लिए 13 से 14 जांच की जाती है, जिसमें चार से छह घंटे का समय लग जाता है। नई तकनीक में रक्त से डीएनए निकालने के लिए इन्नो एक्सट्रैक्ट (तरल रूप) का उपयोग किया जाता है, जिसमें दस मिनट के भीतर दो से तीन जांच करने के साथ ही डीएनए अलग हो जाएगा। इसके बाद की जांच के लिए लैब में जाना पड़ता है। लैब के अंदर डीएनए को एक निश्चित तापमान (-40 डिग्री सेल्सियस) में रखना होता है। निर्धारित तापमान पर आने के बाद उसकी जांच होती है, जिसमें 12 से 15 घंटे का समय लग जाता है। नई तकनीक के अनुसार, लैब का काम नए यंत्र से होगा, जो चंद मिनटों में आवश्यक तापमान प्राप्त कर लेगा। इसके बाद अन्य जांच स्वतः होती जाएंगी। 10 से 15 मिनट में परिणाम आ जाएगा। नई किट को एक से दूसरे स्थान पर आसानी से ले जाया जा सकता है क्योंकि इसका आकार छोटा है। भांबरा बताते हैं कि लैब का परिणाम इंस्ट्रूमेंट पर लेने तक का कार्य पूरी तरह से सफल है। अब रिपोर्ट डिजिटल लेने के लिए इंस्ट्रूमेंट में अपडेशन की जा रही है। इसके पूरा होते ही किट को मार्केट में उतार दिया जाएगा। इससे पूरी रिपोर्ट मोबाइल फोन पर डिजिटली उपलब्ध होगी।

पंचकूला में इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल में डीएनए जांच के लिए बनाई किट की जानकारी देते इंडोक्स साल्यूशंस के संस्थापक जिम्मी भांबरा • जागरण

### खर्च में आएगी 60 से 70 प्रतिशत तक की कमी

डीएनए जांच के लिए नई किट को बड़ा परिवर्तनकारी माना जा रहा है। नई किट से डीएनए की जांच करने में समय की बचत के साथ खर्च में 60 से 70 प्रतिशत की कमी आएगी। सैंपल तैयार के बाद आगे की जांच के लिए लैब जाने की आवश्यकता नहीं होगी। इससे काम आसान हो जाएगा।

डीएनए जांच के लिए यह एक बेहतरीन प्रयास है। इसके टेस्ट सफल रहे हैं और इसके आने से समय की बचत होगी, जो आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

**-सर्तेंद्र सिंह चौधरी,** सीईओ टेक्नोलाजी बिजनेस इनक्यूबेटर आइसर, मोहाली

अतिरिक्त सामग्री पढ़ने के लिए स्कैन करें।

# इंडिगो की उड़ानों पर आफत बरकरार

## सातवें दिन भी परिचालन सामान्य नहीं **500 उड़ानें रद** दिल्ली व बेंगलुरु एयरपोर्ट सबसे ज्यादा प्रभावित

**नई दिल्ली, प्रेट्र :** इंडिगो की उड़ानों पर आफत बरकरार है। व्यवधान उत्पन्न होने के सातवें दिन भी परिचालन पूरी तरह सामान्य नहीं हुआ है। पिछले मंगलवार से सैकड़ों उड़ानें रद करने के बाद कंपनी सामान्य स्थिति बहाल करने के लिए संघर्ष कर रही है, जिससे लाखों यात्रियों पर प्रभाव पड़ा है। नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने बताया कि सोमवार को इंडिगो की लगभग 500 उड़ानें रद की गईं। इस दिन कंपनी ने 1802 उड़ानों का संचालन किया। रविवार को 1650 उड़ानों का संचालन किया गया था। कंपनी आमतौर पर प्रतिदिन 2300 उड़ानों का संचालन करती है।

उड़ानें रद किए जाने का सबसे ज्यादा असर दिल्ली और बेंगलुरु हवाई अड्डों पर पड़ा। दिल्ली में 143 उड़ानें रद की गईं। इनमें 60 आगमन और 83 प्रस्थान की उड़ानें थीं। बेंगलुरु हवाई अड्डे से 150 उड़ानें रद की गईं। मुंबई और हैदराबाद हवाई अड्डों पर क्रमशः 98 और 112 उड़ानें रद की गईं। वैसे, कंपनी का कहना है कि धीरे-धीरे हालात सामान्य हो रहे हैं। इंडिगो की तरफ से दो दिन पहले बताया गया था कि पांच-सात दिनों में ही स्थिति सामान्य हो पाएगी।

आइएएनएस के अनुसार, सरकार की कड़ी जांच का सामना कर रही इंडिगो ने सोमवार को कहा कि उसने अब तक यात्रियों को 827 करोड़ रुपये रिफंड कर दिए हैं और बाकी रकम 15 दिसंबर तक वापस करने की प्रक्रिया में है। यात्रियों के 9000 लगेज फंसे हुए थे। इनमें 4500 बैग संबंधित यात्रियों तक पहुंचा दिए गए हैं। बाकी 4500 बैग अगले 36 घंटों में पहुंचाने की तैयारी चल रही है। इंडिगो ने यह भी दावा किया कि उसने फंसे हुए ग्राहकों की सुविधा के लिए एक से सात दिसंबर के बीच होटलों में 9500 से अधिक कमरों और करीब 10000 कैब/बसों का इंतजाम किया है।

इंडिगो की उड़ानें रद होने के बाद नई दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर टिकट काउंटर पर खड़े यात्री। ● एएनआइ

### 39 हजार करोड़ रुपये कम हुई बाजार पूंजी

इंडिगो को अपने मनमानेपन का खामियाजा आर्थिक रूप से भी भुगतना पड़ रहा है। बीते सात दिनों में इंडिगो के शेयरों में 17 प्रतिशत से ज्यादा की गिरावट आई है। इससे कंपनी के बाजार पूंजीकरण में 4.3 अरब डालर (करीब 38,700 करोड़ रुपये) की कमी दर्ज की गई। सोमवार को कंपनी के शेयरों में 8.28 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई। एक दिसंबर को कंपनी के शेयरों का मूल्य 5790.5 रुपये प्रति इकाई था, जो आठ दिसंबर को घटकर 4926.55 रुपये प्रति इकाई रह गया। एक अन्य घरेलू विमानन कंपनी स्पाइसजेट के शेयर सोमवार को 4.47 प्रतिशत की बढ़त के साथ 32.50 रुपये प्रति इकाई पर बंद हुए।

## यह इंडिगो की खुद की बनाई हुई समस्या, करेंगे कार्रवाई : नायडू

**जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली:** अब यह पूरी तरह से साफ हो चुका है कि उड्डयन क्षेत्र में अव्यवस्था के लिए इंडिगो अपराधी है। इंडिगो के अपने स्वार्थ और मनमानी की वजह से ही भारत के नागरिक उड्डयन सेक्टर को चार-पांच दिनों तक इतिहास के सबसे बड़े संकट से जूझना पड़ा है। भारत के नागरिक उड्डयन बाजार पर 64 प्रतिशत हिस्सेदारी रखने वाली इंडिगो ने सरकार के नियमों को कभी गंभीरता से लिया ही नहीं। एक तरह से इंडिगो ने सरकार को दबाव में लाने और अपनी शर्तों को मनवाने के लिए पूरी अव्यवस्था बनाई और हजारों यात्रियों को इसका शिकार बनाया।

इसकी जानकारी स्वयं नागरिक उड्डयन मंत्री के. राममोहन नायडू ने सोमवार को राज्यसभा में दी। उन्होंने सख्त रुख अपनाते हुए कहा कि यह इंडिगो का आंतरिक संकट है, जिसके लिए एयरलाइन पूरी तरह जिम्मेदार है। इस मामले में सरकार इतनी सख्त कार्रवाई करेगी कि यह अन्य एयरलाइनों के लिए मिसाल बने। स्पष्ट है कि जांच समिति की रिपोर्ट आने के बाद इंडिगो को भारी पेनाल्टी का भी सामना करना पड़ेगा और भविष्य में उसका वर्चस्व भी कम किया जाएगा। नायडू ने कहा कि मंत्रालय स्वस्थ प्रतिस्पर्धा बढ़ाने के लिए काम कर रहा है। भारत की हवाई यात्रा मांग को देखते हुए कम-से-कम पांच बड़ी एयरलाइनों की जरूरत है। नई कंपनियों को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार सहयोग देगी, ताकि ऐसी एकाधिकार वाली स्थितियां न हों।

**कहा, नई कंपनियों को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार सहयोग देगी, ताकि ऐसा एकाधिकार न बने**

इंडिगो संकट के बारे में सोमवार को राज्यसभा में जानकारी देते केंद्रीय मंत्री राममोहन नायडू। ● प्रेट्र

# सबसे खराब श्रेणी में पटना सहित आठ शहरों की हवा

**जागरण संवाददाता, पटना :** राजधानी सहित प्रदेश के आठ शहरों की हवा सोमवार को सबसे अधिक खराब रही। राजधानी का औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआइ) 219 दर्ज किया गया, जबकि समनपुरा की हवा प्रदेश में सबसे अधिक प्रदूषित रही। यहां का एक्यूआइ 313 दर्ज होने के साथ बहुत खराब श्रेणी में पहुंच गया। आरा का एक्यूआइ 257 दर्ज किया गया। राजधानी के दानापुर में 243, मुरादपुर में 251, राजवंशी नगर में 163 एवं पटना सिटी के शिकारपुर में 126 एक्यूआइ दर्ज किया गया। बेगूसराय की हवा प्रदेश में सबसे स्वच्छ रही, जहां का एक्यूआइ 37 दर्ज किया गया। मध्यम दर्जे के प्रदूषित शहरों में बेतिया, भागलपुर, बक्सर, गया, मुजफ्फरपुर, समस्तीपुर एवं किशनगंज रहा। मौसम विज्ञानी के अनुसार, सर्दी के दिनों में वायु की गुणवत्ता घटती-बढ़ती रहती है। सर्द दिनों में तापमान कम होने के कारण हवा का घनत्व बढ़ता है। हवा में घनत्व के बढ़ने और तापमान कम होने के कारण प्रदूषित हवा नीचे रह जाती है।

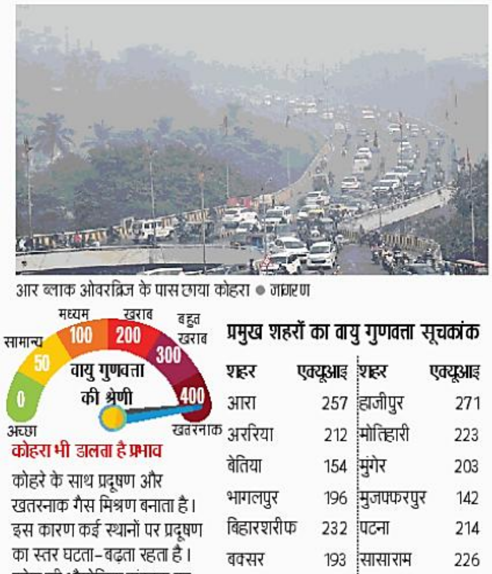

आर ब्लाक ओवरब्रिज के पास छाया कोहरा ● जागरण

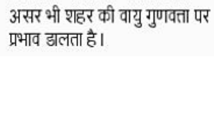


### कोहरा भी डालता है प्रभाव

कोहरे के साथ प्रदूषण और खतरनाक गैस मिश्रण बनाता है। इस कारण कई स्थानों पर प्रदूषण का स्तर घटता-बढ़ता रहता है। प्रदेश की भौगोलिक संरचना का असर भी शहर की वायु गुणवत्ता पर प्रभाव डालता है।

### प्रमुख शहरों का वायु गुणवत्ता सूचकांक

| शहर | एक्यूआइ | शहर | एक्यूआइ |
|---|---|---|---|
| आरा | 257 | हाजीपुर | 271 |
| अररिया | 212 | मोतिहारी | 223 |
| बेतिया | 154 | मुंगेर | 203 |
| भागलपुर | 196 | मुजफ्फरपुर | 142 |
| बिहारशरीफ | 232 | पटना | 214 |
| बक्सर | 193 | सासाराम | 226 |
| छपरा | 254 | समस्तीपुर | 126 |
| गया | 161 | किशनगंज | 158 |

# राजधानी सहित 15 जिलों का तापमान गिरा, छाए रहेंगे बादल

**जागरण संवाददाता, पटना :** प्रदेश के मौसम में धीरे-धीरे बदलाव हो रहा है। ज्यादातर भागों में कोहरे का प्रभाव बने होने के साथ पछुआ के कारण मौसम शुष्क बने होने के साथ कुछ स्थानों पर आंशिक रूप से बादल छाए रहने के आसार हैं। सोमवार को पटना सहित 15 जिलों के अधिकतम तापमान में गिरावट दर्ज की गई। पछुआ की गति अधिक रहने से दिन में भी कनकनी का प्रभाव रहेगा।

सोमवार को पटना सहित ज्यादातर भागों के अधिकतम तापमान में वृद्धि दर्ज की गई। पटना का न्यूनतम तापमान 14.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। वहीं, 7.6 डिग्री सेल्सियस के साथ भागलपुर के सबौर प्रदेश में सबसे ठंडा स्थान रहा। पटना का अधिकतम तापमान 23.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। चार सौ मीटर के साथ पूर्णिया में सबसे कम दृश्यता दर्ज की गई।

सोमवार को पटना व आसपास इलाकों में आंशिक रूप से बादल छाए रहने के साथ ठंड का प्रभाव बना रहा।

**7.6** डिग्री सेल्सियस के साथ भागलपुर के सबौर प्रदेश में सबसे ठंडा स्थान

**23.1** डिग्री सेल्सियस पटना का तापमान

### प्रमुख शहरों का तापमान

| शहर | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|
| पटना | 23.1 | 14.1 |
| गया | 24.4 | 10.6 |
| भागलपुर | 24.0 | 10.6 |
| मुजफ्फरपुर | 23.0 | 13.2 |

(तापमान डिग्री सेल्सियस में)

# चुनौतियों के बीच गेहूं का उत्पादन बढ़ा, लागत घटाने पर देना होगा जोर

**जागरण संवाददाता, पटना :** गेहूं की खेती में काफी चुनौतियां हैं। बीते पांच साल के आंकड़ों पर गौर करें तो कैमूर, रोहतास, भोजपुर, औरंगाबाद, नवादा, गया, बक्सर, नालंदा, वैशाली, बेगूसराय, लखीसराय व मधेपुरा में रकबा के साथ उत्पादन भी बढ़ा है। इनमें अधिसंख्य दक्षिण बिहार के जिले शामिल हैं। इसके विपरीत बांका, भागलपुर, किशनगंज, कटिहार, अररिया, पूर्णिया व अरवल में रकबा और उत्पादन दोनों में गिरावट दर्ज की गई है। ये बातें विकास प्रबंधन संस्थान (डीएमआइ), पटना के सीनियर फैकल्टी प्रो. सूर्यभूषण ने सोमवार को दैनिक जागरण पटना कार्यालय में जागरण विमर्श में 'बिहार में कृषि उत्पाद और एमएसपी पर खरीद : संभावना और चुनौती' विषय पर कहीं।

**जागरण विमर्श**

- डीएमआइ, पटना के सीनियर फैकल्टी प्रो. सूर्यभूषण ने रखे विचार, कहा, खेती की लागत घटा उत्पादन बढ़ाने की जरूरत

विचार रखते प्रो. सूर्यभूषण, सीनियर फैकल्टी, डीएमआइ, पटना। ● जागरण

उन्होंने कहा कि किसानों के सामने मूल समस्या बाजार की है। एमएसपी (न्यूनतम समर्थन मूल्य) का निर्धारण लागत पर निर्भर करता है। 50 प्रतिशत मुनाफे पर एमएसपी तय की जाती है। केंद्र और राज्य की ओर से कुछ बोनस भी दिए जाते हैं। पंजाब में धान की खेती अधिक होती है। वहां खेती की लागत कम है, जबकि बिहार में अधिक। पंजाब में 1,500 रुपये प्रति हेक्टेयर लागत आती है। बिहार में 1,800 से 1,900 रुपये प्रति हेक्टेयर लागत है, जिसे कम करने की जरूरत है। कृषि का क्षेत्र काफी व्यापक है। इसे अलग नजरिए से देखते हुए इसके विकास की ओर से ध्यान देने की जरूरत है। इस दिशा में सरकारी स्तर पर प्रयास भी हो रहे हैं। बिहार की मिट्टी एवं जलवायु खेती के लिए सबसे उपयुक्त है। यहां खेती की लागत घटा कर उत्पादन बढ़ाने की जरूरत है। इसी से किसान लाभान्वित होंगे और प्रति व्यक्ति आय के साथ राज्य की जीडीपी भी बढ़ेगी।

**खाद और बीज की गुणवत्ता की नियमित जांच की हो व्यवस्था :** प्रो. सूर्यभूषण ने कहा कि खाद और बीज की गुणवत्ता सही नहीं होने से उत्पाद पर असर पड़ता है। ऐसे में गुणवत्ता की नियमित जांच की व्यवस्था की जानी चाहिए। कृषि के क्षेत्र में राज्य को आगे बढ़ाने के लिए उन्होंने नौ सुझाव भी दिए। कहा कि राज्य की परिस्थितियों के अनुसार एमएसपी निर्धारण की व्यवस्था की जाए। एमएसपी के अतिरिक्त राज्य सरकार द्वारा बोनस देने की नीति लागू की जाए। खरीद प्रक्रिया से जुड़ी आधारभूत संरचना को मजबूत किया जाए। खरीद व्यवस्था को विकेंद्रीकृत कर स्थानीय स्तर पर सुलभ बनाया जाए। प्राइस डेफिशिएंसी पेमेंट सिस्टम (पीडीपीएस) को लागू किया जाए, ताकि किसानों को मूल्य अंतर की भरपाई मिल सके। उत्पादन लागत बढ़ने के मूल कारणों की पहचान कर उनका समाधान किया जाए। फसल उत्पादकता बढ़ाने और बाजार से जोड़ने के लिए बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराई जाए। क्षेत्रवार खेती की लागत का विस्तृत अध्ययन किया जाए, ताकि नीतियां उसी आधार पर बनाई जा सकें। इसके साथ ही किसानों में जागरूकता बढ़ाने और क्षमता निर्माण के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाने की जरूरत है। पंजाब में बिहार की तुलना में धान और गेहूं का उत्पादन डेढ़ गुना अधिक है। वहां खेती में उन्नत तकनीक का इस्तेमाल हो रहा है।

### राज्य में दुग्ध उत्पादन हुआ दोगुना

कृषि में सकल मूल्य संवर्धन के आंकड़ों की तुलना की जाए तो बिहार में दुग्ध उत्पादन दोगुना हुआ है। वर्ष 2002-03 में यहां दुग्ध उत्पादन 12 प्रतिशत था, जो 2022-23 में बढ़कर 28 प्रतिशत हो गया। बिहार की जीडीपी में 20 प्रतिशत योगदान कृषि का है। इसे बढ़ाने की दिशा में और तेजी से प्रयास किए जाएं। भारत की जीडीपी में बिहार का योगदान 1963 में पांच प्रतिशत था। अभी यह बढ़कर 15 प्रतिशत हो गया है। यहां प्रति व्यक्ति आय भी राष्ट्रीय औसत से कम है। इसके साथ ही विकास की रफ्तार भी कम है। विकास की रफ्तार बढ़ने से प्रति व्यक्ति आय भी बढ़ेगी। अमेरिका की तुलना में भारत में प्रति व्यक्ति आय 33 गुना कम है, जबकि उत्पादकता 10 गुना ही कम है। बिहार में वर्ष 1990 से 2005 के बीच जीडीपी औसतन 4.20 प्रतिशत रही। यह 2005 से 2025 के बीच बढ़कर 7.30 प्रतिशत हो गई।

# गोल्डी कुमारी दुबई में लहराएंगी परचम

**जासं, पटना :** बिहार की धरती फिर गौरवान्वित है। नालंदा की 17 वर्षीय गोल्डी कुमारी अंतरराष्ट्रीय मंच पर बिहार का नाम रौशन करने जा रही हैं। गोल्डी सात से 14 दिसंबर तक दुबई में होने वाले एशियन यूथ पैरा गेम्स 2025 में भारत की एकमात्र खिलाड़ी के रूप में हिस्सा ले रही हैं। इनका पारिवारिक निवास मिस्सी, बख्तियारपुर में है। वो तीन स्पर्धाओं, जेवलिन थ्रो, शाट पुट और डिस्कस थ्रो में अपनी प्रतिभा दिखाएंगी। इससे पहले भी अंतरराष्ट्रीय सुर्खियों में रही हैं। थाईलैंड में आयोजित वर्ल्ड एबिलिटी यूथ गेम्स 2024 में उन्होंने भारत के लिए एक स्वर्ण और दो

रविंद्रण शंकरण के साथ गोल्डी कुमारी ● सौ: खेल प्राधिकरण

कांस्य पदक जीतकर बिहार का नाम वैश्विक स्तर पर दर्ज कराया था। इनको वर्ष 2014 में प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। बिहार राज्य खेल प्राधिकरण के खेल महानिदेशक रविंद्रण शंकरण ने गोल्डी को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि बिहार की बेटियां आज हर मंच पर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रही हैं। गोल्डी हमारे राज्य का गौरव हैं। वर्तमान में भारतीय खेल प्राधिकरण के नेशनल सेंटर आफ एक्सीलेंस, कोलकाता में कोच सुष्मिता सिन्हा के निर्देशन में प्रशिक्षण ले रही हैं। गांव में रहने के दौरान कोच कुंदन कुमार पांडेय हरनौत के फुटबाल मैदान में इसका अभ्यास करवाते थे। गोल्डी इस समय सेंट पाल इंग्लिश स्कूल, हरनौत में कक्षा 11वीं की छात्रा हैं और पढ़ाई व खेल दोनों में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रही हैं।